नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

क्या ट्रंप यू-टर्न ले रहे हैं?

अंतरराष्ट्रीय राजनीति में बयानबाज़ी अक्सर रणनीति का हिस्सा होती है. हाल ही में इसका उदाहरण अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का भारत को लेकर दिया गया ताजा बयान है. ट्रंप ने पहले यह टिप्पणी की कि भारत चीन के हाथों फिसल रहा है, लेकिन कुछ ही घंटों बाद उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को अच्छा दोस्त और महान प्रधानमंत्री बताया. इस विरोधाभास ने सवाल खड़े कर दिए हैं कि क्या ट्रंप वास्तव में भारत को लेकर यू-टर्न ले रहे हैं या यह उनकी पारंपरिक राजनीतिक शैली का हिस्सा है. प्रधानमंत्री मोदी ने इस पर संयमित प्रतिक्रिया दी और ट्रंप की भावनाओं की तहे दिल से सराहना की. उन्होंने स्पष्ट कहा कि भारत-अमेरिका साझेदारी गहरी है और सकारात्मक दिशा में आगे बढ़ रही है. विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने भी इस पर बल दिया कि प्रधानमंत्री मोदी अमेरिकी संबंधों को विशेष महत्व देते हैं. इस प्रतिक्रिया से यह साफ है कि भारत अपने रुख़ में स्थिर और गंभीर है, भले ही सामने से कितने भी बदलते संदेश क्यों न आएं. ट्रंप की राजनीति में व्यक्तिगत रिश्तों की अहम भूमिका रही है. अपने कार्यकाल के दौरान उन्होंने मोदी के साथ सार्वजनिक कार्यक्रमों में दोस्ताना रुख दिखाया. लेकिन उनकी शैली अचानक तीखे आरोपों और अप्रत्याशित टिप्पणियों से भी भरी रही है. यही कारण है कि कभी वे भारत की आर्थिक नीतियों पर सवाल उठाते हैं, तो कभी व्यक्तिगत स्तर पर मोदी की सराहना करते हैं. मौजूदा बयानबाज़ी उसी पैटर्न की झलक देती है.

यह भी ध्यान देने योग्य है कि ट्रंप का दोस्ती वाला बयान ऐसे समय आया है जब भारत अमेरिकी व्यापारिक दबाव का सामना कर रहा है. अमेरिका ने भारत पर 50 फ़ीसदी तक के टैरिफ लगाए हैं और व्यापार असंतुलन को लेकर लगातार असंतोष जताता रहा है. ऐसे में ट्रंप का मोदी को दोस्त कहना कहीं न कहीं उनके निजी समीकरण और राजनीतिक गणित को दर्शाता है. इससे भारत को यह संदेश भी मिलता है कि वॉशिंगटन की राजनीति में व्यक्तिगत संबंध और आर्थिक दबाव साथ-साथ चलते हैं.भारत की दृष्टि से महत्वपूर्ण यह है कि उसने कभी भी अमेरिका की इन आंतरिक जटिलताओं को लेकर घबराहट नहीं दिखाई. मोदी सरकार ने ट्रंप और बाइडेन दोनों प्रशासन के साथ यह सुनिश्चित किया कि रिश्ते केवल व्यक्तियों पर आधारित न रहें, बल्कि संस्थागत ढांचे और साझा हितों पर टिके हों. यही वजह है कि ट्रंप की आलोचना या प्रशंसा, दोनों ही परिस्थितियों में भारत की विदेश नीति की स्थिरता बनी रहती है.

यह भी सच है कि ट्रंप की टीम और रिपब्लिकन पार्टी के कुछ सहयोगी भारत पर अक्सर हमलावर रुख अपनाते हैं. मानवाधिकार, व्यापार और रणनीतिक मुद्दों पर तीखी आलोचना देखने को मिलती है. ऐसे में ट्रंप के सकारात्मक बयान और उनके सहयोगियों की नकारात्मक टिप्पणियां एक विरोधाभासी स्थिति बनाती हैं. यह भारत के लिए एक चुनौती भी है कि वह इन दोनों प्रवृत्तियों के बीच संतुलन बनाए रखे .कूटनीतिक दृष्टि से भारत ने यह संतुलन साधने की कला पिछले दशक में विकसित की है. मोदी की विदेश नीति का मुख्य आधार यह है कि बदलती परिस्थितियों में भी राष्ट्रीय हित सर्वोपरि रहे. इसलिए चाहे ट्रंप यू-टर्न लें या अमेरिकी टैरिफ का दबाव बढ़े, भारत अपने रणनीतिक लक्ष्यों पर केंद्रित है. यही स्थिरता आज भारत को वैश्विक राजनीति में एक विश्वसनीय और आत्मविश्वासी साझेदार बनाती है.

कुल मिलाकर ट्रंप के बदलते बयान अमेरिका की राजनीति की अनिश्चित शैली का हिस्सा हैं. भारत के लिए जरूरी यह है कि वह इन बयानों को व्यक्तिगत समीकरण से आगे न ले जाकर व्यापक साझेदारी के नजरिए से देखे. प्रधानमंत्री मोदी का संयमित और सकारात्मक जवाब इसी रणनीति को मजबूत करता है. आने वाले समय में यही दृष्टिकोण भारत-अमेरिका संबंधों को स्थिरता और गहराई देगा.

जन्मदिन 8 सितंबर पर विशेष

भूपेन दा...भारत के रत्न

नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

> भूपेन दा राजनीतिक व्यक्ति नहीं थे, फिर भी जनसेवा की दुनिया से जुड़े रहे. 1967 में वे असम के नौबोइचा से निर्दलीय विधायक चुने गए. यह दिखाता है कि लोगों को उन पर कितना गहरा विश्वास था. उन्होंने राजनीति को अपना करियर नहीं बनाया, लेकिन हमेशा लोगों की सेवा में जुटे रहे. भारत की जनता और भारत सरकार ने उनके योगदान का सम्मान किया. उन्हें पद्मश्री, पद्मभूषण, पद्मविभूषण, दादासाहेब फाल्के अवार्ड समेत कई सम्मान मिले. 2019 में हमारे कार्यकाल के दौरान उन्हें भारत रत्न मिला. यह मेरे लिए और एनडीए सरकार के लिए भी सम्मान की बात थी.

भारतीय संस्कृति और संगीत से लगाव रखने वालों के लिए आज 8 सितंबर का दिन बहुत खास है. और विशेषकर इस दिन के साथ असम के मेरे भाइयों और बहनों की भावनाएं जुड़ी हुई हैं. आज भारत रत्न डॉ. भूपेन हजारिका की जन्म जयंती है. वे भारत की सबसे असाधारण और सबसे भावुक आवाज़ों में से एक थे. ये बहुत सुखद है कि इस वर्ष उनके जन्म शताब्दी वर्ष का आरंभ हो रहा है. यह भारतीय कला-जगत और जन-चेतना की दिशा में उनके महान योगदानों को फिर से याद करने का समय है.

भूपेन दा ने हमें संगीत से कहीं अधिक दिया. उनके संगीत में ऐसी भावनाएं थीं जो धुन से भी आगे जाती थीं. वे केवल एक गायक नहीं थे, वे लोगों की धड़कन थे. कई पीढ़ियां उनके गीत सुनते हुए बड़ी हुईं. उनके गीतों में हमेशा करुणा, सामाजिक न्याय, एकता और गहरी आत्मीयता की गूंज है.

भूपेन दा के रूप में असम से एक ऐसी आवाज़ निकली जो किसी कालजयी नदी की तरह बहती रही. भूपेन दा सशरीर हमारे बीच नहीं हैं लेकिन उनकी आवाज आज भी हमारे बीच है. वो आवाज आज भी सीमाओं और संस्कृतियों से परे है. उसमें मानवता का स्पर्श है.

भूपेन दा ने दुनिया का भ्रमण किया, समाज के हर वर्ग के लोगों से मिले, लेकिन वे असम में अपनी जड़ों से हमेशा जुड़े रहे. असम की समृद्ध मौखिक परंपराएं, लोकधुनें और सामुदायिक कहानी कहने के तरीकों ने उनके बचपन को गढ़ा. यही अनुभव उनकी कलात्मक भाषा की नींव बने. वे असम की आदिवासी पहचान और लोगों के सरोकार को हर समय साथ लेकर चले.

बहुत छोटी उम्र से उनकी प्रतिभा लोगों को नजर आने लगी. केवल पांच वर्ष की उम्र में उन्होंने सार्वजनिक मंच पर गाया. वहां लक्ष्मीनाथ बेझबरुआ जैसे असमिया साहित्य के अग्रदूत ने उनके कौशल को पहचाना. किशोरावस्था तक पहुंचते-पहुंचते उन्होंने अपना पहला गीत रिकॉर्ड कर लिया.

लेकिन संगीत उनके व्यक्तित्व का सिर्फ एक पहलू था. भूपेन दा भीतर से एक बौद्धिक व्यक्तित्व थे. जिज्ञासु, साफ बोलने वाले, दुनिया को समझने की अटूट चाह रखने वाले. ज्योति प्रसाद अग्रवाला और विष्णु प्रसाद रभा जैसे सांस्कृतिक दिग्गजों ने उनके मन पर गहरा प्रभाव डाला, और उनकी जिज्ञासु प्रवृत्ति को और बढ़ावा दिया.

सीखने की यही लगन उन्हें कॉटन कॉलेज, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय तक ले गई. वो बीएचयू में राजनीति शास्त्र के छात्र थे, लेकिन उनका अधिकतर समय संगीत साधना में बीतता था. बनारस ने उन्हें पूरी तरह संगीत की तरफ मोड़ दिया. काशी का सांसद होने के नाते मैं उनकी जीवन यात्रा से एक जुड़ाव महसूस करता हूं, और मुझे बहुत गर्व होता है.

काशी से आगे बढ़ी जीवन यात्रा में फिर उन्होंने अमेरिका में कुछ समय बिताया. वहां उन्होंने अपने समय के नामचीन विद्वानों, विचारकों और संगीतकारों से संवाद किया. वे पॉल रोबसन से मिले, जो दिग्गज कलाकार और सिविल राइट्स नेता थे. रोबसन का गीत ऋहृद्य' स्ड्डठ्ठ ऋद्ध1द्गह्ल उनके कालजयी गीत 'चबिश्टीरनो परोरे' की प्रेरणा बना. अमेरिका की पूर्व प्रथम महिला एलेनॉर रूजवेल्ट ने भारतीय लोकसंगीत प्रस्तुतियों के लिए उन्हें गोल्ड मेडल भी दिया. भूपेन हजारिका, संगीत के साथ ही मां भारती के भी सच्चे उपासक थे. भूपेन दा के पास अमेरिका में रहने का विकल्प था, लेकिन वे भारत लौट आए और संगीत साधना में डूब गए. रेडियो से लेकर रंगमंच तक, फिल्मों से लेकर एजुकेशनल डॉक्यूमेंट्री तक, हर माध्यम में वे पारंगत थे. जहां भी गए, नई प्रतिभाओं को समर्थन दिया.

भूपेन दा की रचनाएं काव्यात्मक सौंदर्य से भरी रहीं, और साथ-साथ उन्होंने सामाजिक संदेश भी दिए. गरीबों को न्याय, ग्रामीण विकास, आम नागरिक की ताकत, ऐसे अनेक विषय उन्होंने उठाए. उनके गीतों ने नाविकों, चाय बागान के मजदूरों, महिलाओं, किसानों की आकांक्षाओं को आवाज़ दी. उनकी रचनाएं लोगों को पुरानी स्मृतियों में ले जाती थीं, साथ ही, उन्होंने आधुनिकता को देखने का एक सशक्त नजरिया भी दिया.

विन्ध्य की डायरी

विन्ध्य में संगठन सृजन के बाद उठी हक की हुंकार

डॉ. रवि तिवारी

किसी ने ठीक कहा है कि राजनीति का ऊँट कब अपनी करवट बदल लें इसका आभास भी नही होता. प्रदेश कांग्रेस के संगठन सृजन अभियान के बाद हमेशा चुप्पी साध के सब कुछ सहने वाले समाज ने अपने विद्रोही तेवर दिखा के राजनीति के बदले रुख का संकेत सार्वजनिक कर दिया है. जातिवादी कुनबों में बटी विन्ध्य की राजनीतिक बिसात में हमेशा वजीर की भूमिका में राजा के अगल-बगल रहने वाले समाज के घटे प्रभाव का एहसास लंबे समय से हो रहा था, लेकिन प्रत्यक्ष तौर पर कोई संकेत बाहर आ नही रहे थे. अचानक चिंतन शिविर की आड़ में एकजुट हुए लोगों ने अपनी अंदरूनी फड़फड़ाहट को न सिर्फ हवा दी है बल्कि यह विन्ध्य में किसी नए तरह का राजनीति प्रयोग है. जिसका आयोजन प्रयोजन सुनियोजित है. यह अलग बात है कि अभी सिर्फ दूध के दाँत सामने आए हैं खाने वाले दाँत अभी भी पर्दे के पीछे रह कर असर का मुल्यांकन कर रहे हैं. काग्रेस की बदली परिस्थितियों से उपजे इस तरह के संकेत किसी नए राजनैतिक ध्रुवीकरण की ओर इशारा कर रहे हैं. जिसका असर बहुमत का गाल बजाने वालो पर भी उतना ही पड़ेगा जितना विपक्ष की राजनीति का दंस दो दशकों से झेल रहे दल को.देखना यह है कि यह उपेक्षा की शुरू हुई चर्चा कितने आगे तक जाती है और इसका अमृत पान कौन करता है.

किसानो ने मांगी खाद मिली लाठियां- खेती लाभ का धंधा भला कैसे बनेगा और किसानो की आय दोगुनी भी कैसे होगी. जब जरूरत के समय में खाद की जगह रात के अंधेरे में लाठियां मारी जाय. जिस तरह से पुलिस का असली चेहरा सामने आया है, उससे यह कहने में कोई गुरेज नही कि पुलिस के डंडे सिर्फ गरीब और बेवश किसानो के लिये ही बने है. कहते हैं किसान उग्र हो गए थे, सवाल है-क्या अपना हक मांगना उग्रता है? क्या रीवा की पुलिस इतनी कमजोर है कि किसान की आवाज़ से डर गई और डंडा चला दिया?लेकिन यही पुलिस उस वक्त चुप्पी साध लेती है, जब नेता और दबंग उसकी वर्दी की इज्ज़त तार-तार करते हैं. पूर्व विधायक ने महिला सीएसपी को असंवेदनशील कहा, वहाँ पुलिस घुटनों बल बैठ कर गिड़गिड़ाती नजर आई. एक विधायक ने एसपी को खुलेआम अर्ध नारेश्वर कहा, उस पर भी पुलिस खामोश रही. गरीब किसान पर पुलिस का डंडा टूट जाता है, लेकिन रसूखदार के सामने यही पुलिस हाथ जोडक़र गिड़गिड़ाने लगती है. क्या यही है कानून का राज? क्या यही है न्याय की रक्षा करने वाली वर्दी की शान? रीवा पुलिस का यह दोहरा चरित्र पूरे तंत्र पर सवालिया निशान है.

माननीय विधायकों ने फंसाया पेंच

भाजपा के अंदर सब कुछ ठीक ठाक नही चल रहा है, वर्चस्व की लड़ाई यहा भी चल रही है. सत्ता-संगठन में तालमेल का अभाव भले ही खुलकर सामने न आए पर अंदर ही अंदर खीचतान मची हुई है. रीवा भाजपा संगठन पदाधिकारियों की सूची अधर में लटक गई है. दरअसल कई माननीय विधायको ने पेंच फसा दिया है. संगठन मुख्यालय भेजी गई सूची रोक दी गई है. कुछ नाम पर विधायक सिद्धार्थ ने आपत्ति की है तो कुछ नामो पर विधायक दिव्यराज ने अडंगा लगा दिया है. विधायक नागेन्द्र सिंह को भी कुछ नाम से दिक्कत है. माननीय विधायक अपने चहेतों का नाम जोडऩे के पक्ष में है तो कुछ नाम काटने के पक्ष में है. यही वजह है कि सूची अधर में लटक गई है. संगठन का साफ निर्देश है कि विधायक-सांसद के नजदीकी रिश्तेदार पदाधिकारी नही बनेगे. इस नियम में एक युवा नेता फस गये है. जिनका नाम सूची में शामिल किया जाय या हटाया जाय इसको लेकर भी मंथन चल रहा है. फिलहाल पितृ पक्ष के बाद पदाधिकारियों की सूची आने की उम्मीद है.

सेमीकंडक्टर निर्माण में देश के बढ़ते कदम

दिल्ली के सेमीकॉन इंडिया समारोह में पहली बार स्वदेश में विकसित चिप्स प्रस्तुत कर भारत ने अपनी सेमीकंडक्टर यात्रा में मील का पत्थर रखा है. केंद्र सरकार ने कुछ समय पूर्व 4 सेमीकंडक्टर परियोजनाओं को स्वीकृति देकर देश में ऐसी इकाइयों की संख्या 10 तक पहुंचा दी. 6 राज्यों में 1.6 लाख करोड़ रुपए की लागत से सेमीकंडक्टर का निर्माण किया जाएगा. भारत इस क्षेत्र में देर से उतरा. अब उसे सेमीकंडक्टर की मैन्युफैक्चरिंग में तेजी सेआगे बढ़कर आत्मनिर्भरता का लक्ष्य हासिल करना होगा. इसमें और अधिक निवेश करना होगा. अब तक विश्व में सेमीकंडक्टर सप्लाई चेन में ताइवान, दक्षिण कोरिया, चीन व अमेरिका का दबदबा है. भारत में सिर्फ 1 मेगा प्लांट का निर्माण हो रहा है जबकि चीन में ऐसे 44, जापान में 12, ताइवान में 14, यूरोप में 10 और अमेरिका में 15 प्लांट हैं. भारत में अभी इस प्रोजेक्ट में पेशेवरों की कमी है. 2030 तक सेमीकंडक्टर प्रोजेक्ट में 50,000 से लेकर 10 लाख पेशेवरों की आवश्यकता पड़ेगी. यदि भारत में सभी प्रोजेक्ट समय पर काम करने लगे तो प्रतिदिन 9.5 करोड़ चिप का निर्माण हो सकता है. 2030 तक इसका वैश्विक बाजार 100 अरब डॉलर का हो जाएगा. भारत का लक्ष्य विश्व की अनुमानित 1 खरब डॉलर की चिप बिक्री में 8 से 10 प्रतिशत हिस्सेदारी पाना है. चीन, अमेरिका, यूरोपीय यूनियन, जापान, द. कोरिया और ताइवान अपने यहां चिप निर्माण के लिए 388 अरब डॉलर की भारी सब्सिडी दे रहे हैं. प्रधानमंत्री मोदी ने भी चिप निर्माण की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा है भारत को कम पेपरवर्क और अधिक वेफर वर्क की जरूरत है. कागजी कार्रवाई घटाकर चिप उत्पादन में तेजी लानी होगी. वैश्विक सेमीकंडक्टर मार्केट पहले ही 600 अरब डॉलर का हो चुका है. उन्होंने विश्वास जताया कि भारत जिस तेजी से इस क्षेत्र में आगे बढ़ रहा है उसमें इस 1 ट्रिलियन डॉलर मार्केट का बड़ा हिस्सा भारत के पास होगा.

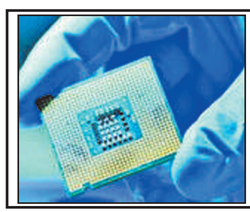

देश भर में सेमीकंडक्टर पार्क विकसित किए जा रहे हैं. आटोमोबाइल से लेकर अंतरिक्ष अभियान के लिए इसकी उपयोगिता है.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

150 वर्ष जिंदा रहने का प्लान पुतिन-जिनपिंग का अरमान

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, जिंदगी लंबी नहीं, बल्कि सार्थक या मीनिंगफुल होनी चाहिए. अपने लिए जिए तो क्या जिए, तू जी ऐ दिल जमाने के लिए! जिंदगी को लेकर अनेक फिल्मी गाने हैं जैसे कि- जिंदगी देनेवाले सुन, तेरी दुनिया से दिल भर गया, मैं यहां जीते जी मर गया! जिंदगी क्या है, गम का दरिया है! मेरी जिंदगी में आए हो तुम बहार बनके, यूं ही साथ-साथ रहना तुम यार प्यार बन के ! मैं जिंदगी में हरदम रोता ही रहा हूं, तड़पता ही रहा हूं!'

हमने कहा, 'लगता है आप रूस के राष्ट्रपति पुतिन और चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग की चर्चा से प्रभावित हुए हैं जो अपनी जिंदगी को लंबा खींचने और 150 वर्ष की आयु तक जिंदा रहने की संभावना पर बात कर रहे थे. एक माइक ने उनकी इस चर्चा को पकड़ लिया. पुतिन के कथन को उनका ट्रांसलेटर चीनी भाषा में अनुवाद करते हुए बोल रहा था-बायोटेक्नोलॉजी लगातार डेवलप हो रही है. मानव अंगों का प्रत्यारोपण लगातार किया जा सकता है. आप जितने लंबे समय तक जीवित रहेंगे, आप उतने ही युवा होते जाएंगे. अमरता भी हासिल कर सकते हैं.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, अमर होने की लालसा को लेकर हिरण्यकश्यप और रावण ने ब्रम्हा से वरदान मांगा था लेकिन फिर भी भगवान विष्णु ने नृसिंह और राम का अवतार लेकर उनके प्राण हर लिए. भस्मासुर अमरता का वरदान पाकर शंकरजी के पीछे दौड़ा था तब विष्णु ने मोहिनी का रूप लेकर उसे अपने साथ नचाया. जैसे ही उसने अपने सिर पर हाथ रखा तुरंत भस्म हो गया. इसलिए मौत कभी न कभी आती ही है.' हमने कहा, 'योग और प्राणायाम से उम्र बढ़ाई जा सकती है. पुतिन और जिनपिंग को बाबा रामदेव के पास आकर योग सीखना चाहिए. कपालभाती और पंचकर्म से उन्हें लाभ हो सकता है. हिमालय जाकर संजीवनी बूटी भी खोज सकते हैं.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज पुतिन और जिनपिंग दोनों 72 साल के हैं. उन्हें अभी से फिक्र करने की जरूरत नहीं है. अपने देश में मोरारजी देसाई 99 वर्ष तक जीवित रहे. सी. राजगोपालाचारी, डा. राधाकृष्णन व राम जेठमलानी ने 90 साल से ज्यादा की उम्र पाई. लालकृष्ण आडवाणी 96 वर्ष के हैं. जब तक ऊपरवाले का वारंट नहीं आता, व्यक्ति जिंदा रहता है. जब तक जीना है, खुशमिजाजी के साथ लाइफ को एंजाय करते हुए जियो और अंबानी का 'जिओ' इस्तेमाल करते रहो.'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12015 - डॉ. सागर खादीवाला

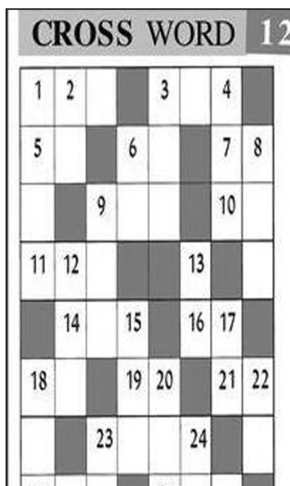

ऊपर से नीचे
1. पैर का प्रहार (सं.) 2. सिलाई करना, छाती 3. लड़ाई-झगड़ा समाप्त होने पर होने वाला मेल, सन्धि (उर्दू) 4. हिलोर, तरंग 6. स्याह, कोयले रंग का 8. बंदर की मादा 9. बादशाह अकबर के पुत्र का नाम 12. एक सदाबहार वृक्ष का नाम, पैर 13. पेड़ की त्वचा, वल्कल 15. अनुकरण, अनुकृति, प्रतिलिपि (उर्दू) 17. कुंजी से खुलने वाला और बंद होने वाला यंत्र 18. ज्ञान प्राप्त करना, खबर रखना, पहचानना 20. बंदर भालू आदि का तमाशा दिखाने वाला बाजीगर 22. डर, खौफ 23. छोटा टुकड़ा, हीरे की कणिका 24. लीन, लिप्त

बाएं से दाएं
1. परिश्रम या गर्मी के कारण शरीर से निकलने वाला पानी 3. उत्तम फल या परिणाम (सं.) 5. अनाज का एक कण, बीज 6. समय, मृत्यु, अंत समय 7. वायु, पवन 9. सम्मति, राय, परामर्श 10. रण. युद्ध, जंगल 11. छोटा तकला, टेकुरी 14. किसी बात को बलपूर्वक दबाना 16. बेल 18. मदिरा पीने का पात्र (उर्दू) 19. अल्प, न्यून, थोड़ा 21. फायदा, कारोबार में होने वाला मुनाफा 23. कल से ढाला गया सिक्का, रुपया 25. नासमझी 26. रिक्त होना. खाली होना

Solution 12014

कू	ट	ना		धा	त	वि	क
द	मा			य	था	व	त
ना	ट	की	य			श	र
	र	क	म		अ		ना
उ		र		ब	धि	र	
मे	वा			ल	क	द	क
ठ	न	क	ना		त		मी
ना	र		क	स	म	सा	ना

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में अत्याधिक परिश्रम केबाद आंशिक सफ्लता मिलेगी, मित्र के कारण विवाद होगा, मान प्रतिष्ठा के प्रति सचेत रहें, मन में खिन्नता रहेगी, वर्ष के मध्य में घरेलू कार्यो में रूचि रहेगी, बैचारिक वाद विवाद होगा, सत्संग में मन शांत रहेगा, वर्ष के अन्त में राजनैतिक मित्र का सहयोग रहेगा, व्यवसाय में वृद्धि होगी.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को शासन से लाभ होगा, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को सत्ता का सुख रहेगा, कर्क राशि के व्यक्तियों को सहयोग मिलेगा,सिंह राशि के व्यक्तियों को शिक्षा में रूचि रहेगी, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को अधिकारी के कोप का सामना करना पड़ेगा, धनु और मीन राशि के व्यक्तियोंको नवीन योजनों में पूॅजी निवेश होगा, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों का सहयोग और सुख शांति रहेगी.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक साहसी, निडर, महत्वाकांक्षी, परिश्रमी, कार्यकुशल, व्यक्तित्ववान होगा. बचपन में स्वास्थ्य कुछ नरम गरम रहेगा. अस्थिर बुद्धि का होगा. कभी उॅटपटांग बात करने वाला होगा. विद्या प्रारंभ में कम तथा बाद में अच्छी रहेगी.

उदयकालीन ग्रह चाल

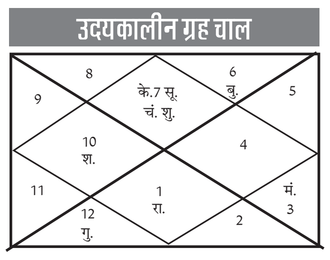

पंचांग

रा.मि. 17 संवत् 2082 आश्विन कृष्ण प्रतिपदा चन्द्रवासरे रात 10/15, पूर्वाभाद्रपद नक्षत्रे रात 10/4, धृति योगे दिन 8/56, बालव करणे सू.उ. 5/49 सू.अ. 6/11, चन्द्रचार कुम्भ शाम 4/16 से मीन, पर्व- महालय प्रारम्भ, प्रतिपदा श्राद्ध, शु.रा. 11,1,2,5,6,8 अ.रा. 12,3,4,7,9,10 शुभांक- 4,6,0.

व्यापार भविष्य

आश्विन कृष्ण प्रतिपदा को पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के प्रभाव से सोना, चांदी, उॅनी वस्त्र, रूई, सूत, सन् के भाव में मंदी होगी. गुड़ खांड, शक्कर, के भाव मेंतेजी होगी. प्लास्टिक दाना, कागज, रबड़ में मंदी होगी, इसके बाद तेजी होगी. भाग्यांक- 1428 है.

मेष- आर्थिक प्रयासों में सफ्लता मिलेगी. पारिवारिक तनाव दूर होगा. दायित्वों की पूर्ति होगीं. जमीनजायजाद के कार्य सफ्ल होंगे.

वृषभ- लाभ कम, खर्च की अधिकता रहेगी. राजकीय कार्यो में सफ्लता प्राप्त होने का योग है. अपूर्ण समाचारों पर कोई भी निर्णय न लेना हितकर.

मिथुन- खानपान पर संयम रखें. कार्य की अधिकता रहेगी. सोचे हुये कार्य में अवरोध पैदा होगा. यात्रा में सावधानी रखकर कार्य करे. यश प्राप्त होगा.

कर्क- भ्रमण मनोरंजन तथा आमोद प्रमोद के साधनों में वृद्धि होगी. दूर गये मित्र के संबंध में सुखद समाचार मिलेगा. मान प्रतिष्ठा बढेगी.

सिंह- आकस्मिक खर्च में वृद्धि होगी. दिनचर्या नियमित रहेगी. अनावश्यक विवादों को टालना हितकर रहेगा. मांगलिक कार्य बनने का योग है.

कन्या- आर्थिक संसाधन में वृद्धि होगी. पूज्य व्यक्ति की सलाह उपयोगी रहेगी. मानसिक संतुलन बना रहेगा. हर्षोल्लास प्राप्त होने का योग है.

तुला- राजकीय समस्या का सरलता से समाधान होगा. निजी पुरूषार्थ बना रहेगा. मांगलिक कार्यो पर व्ययभार होगा. दूर की यात्रा होगी.

वृश्चिक- धार्मिक कार्यो में मानसिक सुख संतोष रहेगा. मान सम्मान मिलेगा. किये गये प्रयासों में लाभ एवं सफ्लता मिलेगी. अतिथि आगमन का योग है.

धनु- किसी विशेष व्यक्ति की मदद प्राप्त होगी. किसी कार्य से लाभ प्राप्त होगा. आमोद प्रमोद के साधनों में वृद्धि होगी. नवीन कार्य की योजना बनेगी. थकान महसूस करेंगे.

मकर- क्रोध पर नियंत्रण रखकर कार्य करना हितकर रहेगा. दूर गये मित्र के संबंध में सुखद एवं लाभदायक समाचार प्राप्त होगा. संदेश मिलेगा.

कुम्भ- कोर्ट कचहरी के कार्य बनेंगे. अधिकारियों से सीमित वार्तालाप करें. व्यय पर नियंत्रण रखकर कार्य करें. प्रयास करने पर सफ्लता मिलेगी.

मीन- पड़ोसियों से संबंधों में सुधार होगा. रक्त संबंधियों से सहयोग मिलेगा. यात्रा में उद्देश्य पूर्ति होगी. सुख सहयोग और लाभ प्राप्त होगा.

SUDOKU 7147

	9				4			
8	4			6		9		5
5		6	8	2		3		
	1	5	6	3			9	7
3	6			9	7	1	4	
		1		4	8	7		6
9		4		7			2	1
			2				8	

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-डोकू 7146

8	5	4	7	3	2	6	1	9
6	7	1	9	5	4	3	2	8
2	9	3	8	6	1	7	5	4
4	3	9	2	1	7	8	6	5
5	6	2	3	8	9	4	7	1
7	1	8	6	4	5	9	3	2
3	2	6	5	9	8	1	4	7
9	4	7	1	2	6	5	8	3
1	8	5	4	7	3	2	9	6